हिन्दी साहित्य

एम.ए. पूर्वार्ध

प्रथम प्रश्न पत्र : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

प्रस्तावना

अपभ्रंश, अवहट्ट एवं देशी भाषा में अभिव्यंजित आदिकालीन साहित्य की परवर्ती कालों को प्र करने में सक्रिय एवं सक्षम भूमिका रही है। इसके अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन नहीं है। पूर्वमध्यकालीन (भक्तिकालीन) काव्य लोक-जागरण और लोकमंगल का नवीन स्वर लेकर आय इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। उत्तर मध्यकालीन (रीति काव्य अपनी कलात्मक अभिव्यंजना में में बेजोड़ है। इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग की धड़क समग्रता में समझने के लिए अनिवार्य है।

इस प्रश्नपत्र में संस्तुत 6 कवि पठनीय हैं। उनकी कालजयी कृतियों का उल्लेख यहाँ कर दिया ग

पाठ्य विषय

व्याख्या एवं विवेचना के लिए निम्नांकित कवियों का अध्ययन किया जाएगा–

1. चंदबरदायी : पृथ्वीराज रासो, संपा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नामवर सिंह-पद्मावती
2. कबीर : कबीर ग्रंथवाली, संपा. डॉ. श्यामसुंदर दास प्रथम 50 साखियाँ तथा प्रथम 2
3. जायसी : पद्मावत, संपा. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, सिंहल द्वीपवर्णन, नागमती विरह खं
4. सूरदास : भ्रमरगीत सार, संपा. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पद संख्या 29 से पद संख्या 6
5. तुलसीदास : रामचरित मानस (गीता प्रेस) उत्तरकांड के प्रारंभिक 25 दोहे-चौपाइयाँ सहित
6. घनानंद : घनआनंद कवित्त, संपा. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र प्रथम 25 छंद

सन्दर्भ पुस्तकः संपादकों द्वारा संकलित पाठ।

द्वितीय प्रश्न पत्र : काव्यशास्त्र एवं साहित्य सिद्धांत

प्रस्तावना

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने ओर जाँचने-परखने के लिए भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी के निजी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है।

पाठ्य विषय

(क) संस्कृत काव्यशास्त्र : काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

- **रस-सिद्धांत** : रस का स्वरूप, रस-निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण धारणा।
- **अलंकार-सिद्धांत** : मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।
- **रीति-सिद्धांत** : रीति की अवधारणा,काव्य-गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।
- **वक्रोक्ति-सिद्धांत** : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।
- **ध्वनि-सिद्धांत** : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि-सिद्धांत की प्रमुख स्थानाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत-व्यंग्य चित्र-काव्य।
- **औचित्य-सिद्धांत** : प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

(ख) पाश्चात्य काव्यशास्त्र

- **प्लेटो** : काव्य-सिद्धांत।
- **अरस्तू** : अनुकरण- सिद्धांत विरेचन।
- **लोंजाइनस** : उदात्त की अवधारणा।
- **टी. एस. इलियट** : परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निवैयक्तिकता का सिद्धांत, कविता का वस्तुनिष्ठ सिद्धांत, संवेदनशीलता का असाहचर्य।

- **आई. ए. रिचर्डस** : रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।
- **सिद्धांत और वाद** : स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।
- **आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ** : संरचनावाद, उत्तर- आधुनिकतावाद।

(ग) **आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ** : ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मनोविश्लेषणवादी, रूपवादी और समाजशास्त्रीय।

संदर्भ ग्रंथ :

1. रीति काव्य की भूमिका,डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिकेशन, दिल्ली।
2. सिद्धांत और अध्ययन, बाबू गुलाबराय, आत्माराम एंड संस, दिल्ली।
3. काव्यशास्त्र, डॉ. भगीरथ मिश्र।
4. पाश्चात्य काव्य शास्त्र, विजय बहादुर सिंह, रामकृष्ण प्रकाशन, विदिशा।
5. उत्तर-आधुनिक साहित्य विमर्श, सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. देरिदा का विखण्डन और साहित्य, सुधीश पचौरी, आधार प्रकाशन, पंचकूला हरियाणा।
7. आलोचक और आलोचना, डॉ. बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

तृतीय प्रश्न-पत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रस्तावना

किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति, दशा एवं संवेदना के विविध स्वरूपों का संचित रूप वहाँ के साहित्य में परिलक्षित होता है।सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण चित्तवृत्तियों में परिवर्तन होता है। फलतः साहित्यिक रूपों में भी बदलाव आ जाता है। इस बदली हुई विकास प्रक्रिया को साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही देखा-परखा जा सकता है। हिन्दी क्षेत्र की परिस्थितियों से कमोबेश पूरा भारत प्रभावित होता रहा है. जिसकी गूँज हिन्दी साहित्य में प्रतिध्वनित है। आठवीं-नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाषा-शैलियों का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है। अतः इसका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है।

पाठ्य विषय

प्रथम इकाई

- इतिहास - दर्शन और साहित्येतिहास।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनलेखन की समस्याएँ।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास : काल-विभाजन, सीमा-निर्धारण ओर नामकरण।

द्वितीय इकाई

- हिन्दी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य, साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ, गद्य साहित्य प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ।
- पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक-चेतना एवं भक्ति-आंदोलन, विभिन्न काव्यधाराएँ तथा उनका वैशिष्ट्य।
- प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान।
- भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्यग्रंथ, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन के तत्व।
- राम और कृष्ण काव्य, रामकृष्ण काव्येतर काव्य, भक्तीतर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य। भक्तिकालीन गद्य-साहित्य।

तृतीय इकाई

- उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल-सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति और लक्षण-ग्रंथों की परांपरा,रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त) प्रवृत्तियाँ ओर विशेषताएँ, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ। रीतिकालीन गद्य साहित्य।

चतुर्थ इकाई

- आधुनिककाल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सन् 1857 ई. की राजक्रांति और पुनर्जागरण।

पंचम इकाई

- भारतेंदु युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास-छायावादी काव्य : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ
- उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ : प्रगतिवादी, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।

- हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि) का विकास।
- हिन्दी आलोचना का उद्‌भव और विकास

I **संदर्भ ग्रंथ**

हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी।

II **हिन्दी साहित्यः** उद्‌भव और विकास, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

III **सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर प्रस्तावितः**

हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली।

- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद।

चतुर्थ प्रश्न पत्र : विशेष कवि का अध्ययन (कोई एक)

सूरदास अथवा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(क) सूरदास : सागर सूर सार — संपादक — डॉ. धीरेन्द्र वर्मा

संदर्भ ग्रंथ :
1. सूरसाहित्य, रामचन्द्र शुक्ल नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी।
2. सूर साहित्य, हजारीप्रसाद द्विवेदी राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. महाकवि सूरदास , नन्द दुलारे वाजपेयी राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : रागविराग, संपादकः रामविलास शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

संदर्भ ग्रंथ :
1. निराला, रामविलास शर्मा,
2. निराला की साहित्य साधना, खंड-2
3. आत्महंता आस्था, दूधनाथ सिंह, लोकभारती इलाहाबाद

(द) आचार्य विधा सागर (मूक माटी) : अगले पृष्ठ पर

म.प्र भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल
स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम

एम.ए. (हिन्दी) पूर्वार्द्ध

अकादमिक वर्ष 2018–19

प्रश्न पत्र – चतुर्थ प्रश्न (विशेष कवि)
प्रश्न पत्र – आचार्य विद्या सागर (मूकमाटी)
अधिकतम अंक :
आंतरिक मूल्यांकन उत्तीर्ण अंक :
लिखित परीक्षा

आचार्य विद्यासागर

आवश्यकता :– आधुनिक महाकाव्य परंपरा में धर्म दर्शन और आध्यात्म का संदर्भ विरल हो चला है। यह कृति इनपक्षों की सम्पूर्ति करती है। अतः इसका अध्ययन छात्र एवं युवा पीढ़ी के लिए आवश्यक है।

उद्देश्य :– इस पुस्तक के माध्यम से समाज से लुप्त हो रहे मानव जीवन मूल्य एवं साहित्य के भूलते जो रहे आस्थाभाव की वापसी हो सकेगी। भारतीय कविता का स्वभाव लोकोन्मुखी है। इस कृति को इस दृष्टि से पढ़ाया जाना वांछित है।

पाठ्यक्रम

इकाई प्रथम : (अ) हिन्दी संत काव्य परम्परा
(ब) आचार्य विद्यासागर के काव्य में लोकमंगल भावना

इकाई द्वितीय : आचार्य विद्यासागर जीवन और व्यक्तित्व परिचय

इकाई तृतीय : आचार्य विद्यासागर का जीवन दर्शन एवं रचना संसार (संक्षिप्त परिचय)

इकाई चतुर्थ : मूकमाटी का महाकाव्यत्व
उद्देश्य, कथानक, पात्र योजना एवं चरित्र चित्रण, संवाद–योजना, परिस्थिति चित्रण, अभिव्यंजना– सौन्दर्य का विश्लेषण।

इकाई पंचम : मूक माटी के प्रमुख पद्यों की व्याख्या
मूक माटी – संचयन
संपादक – डॉ. शीलचन्द्र पालीवाल

संदर्भ सूची

मूल ग्रंथ : 'मूकमाटी' आचार्य विद्यासागर

संदर्भ ग्रंथ : 'मूकमाटी संचयन'

1. उत्तरी भारत की संत परम्परा – डॉ. परशुराम चतुर्वेदी
2. मध्यकालीन धर्मसाधना – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
4. हिन्दी साहित्य का अतीत – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
5. संत साहित्य संदर्भ कोश – डॉ. मुश्री कानडे
6. आचार्य विद्यासागर की लोक दृष्टि और उनके काव्य का कलागत अनुशीलन – डॉ. सुनीता दुबे
7. तंत्र और संत आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी

6.9.18

6.9.18

6.9.18

एम. ए उत्तरार्द्ध हिन्दी
पंचम प्रश्न पत्र :आधुनिक हिन्दी काव्य

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन पृष्ठभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएँ है। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएँ, भावनाएँ एवं नूतन विचार सरणियाँ इसमें अभिव्यक्त हुई है। मुकम्मल मनुष्य इससे अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा ओर ऊर्जा का अजस स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

पाठ्य विषय

मैथिली शरण गुप्त	— साकेत (नवम् सर्ग)
जयशंकर प्रसाद	— कामायनी (श्रद्धा, लज्जा एवं रहस्य सर्ग)
सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	— राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, कुकुरमुत्ता।
स.ही. वात्स्यायन अज्ञेय	— नदी के द्वीप, असाध्यवीणा, बावरा अहेरी, आँगन के पारद्वारा, हरी घास पर क्षणभर, सरस्वती-पुत्र, बना दे चितेरे, भीतर दाता जागा, नया कविः आत्म स्वीकार, नाच।
ग.मा. मुक्तिबोध	— अँधेरे में
नागार्जुन	— बादल को घिरते देखा है, यह तुम थे, प्रेत का बयान, अकाल और उसके बाद, शासन की बंदूक, चंदू मैंने सपना देखा, इन सलाखों से टिकाकर भाल, रजनीगंधा, सिन्दूर तिलकित भाल।

सन्दर्भ पुस्तक सम्पादकों द्वारा संकलित पाठ

षष्ठम प्रश्न पत्रः आधुनिक कथा साहित्य एवं नाटक

प्रस्तावना

आधुनिक काल में गद्य साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है। यह मानव-मन और मस्तिष्क की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं अनिवार्य माध्यम बन गया है। मनुष्य का राग-विराग, तर्क-वितर्क तथा चिंतन-मनन जिस रागात्मकता के साथ कौशलपूर्ण ढंग से गद्य में अभिव्यंजित होता है, वैसा अन्य साहित्यांग में नही। आधुनिक काल में गद्य के विविध रूपों का विकास इस तथ्य का साक्षी है कि प्रौढ़ मन-मस्तिष्क की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य में ही संभव है। निबंध गद्य का प्रौढ़-शक्तिशाली प्रतिरूप, उसकी वैयक्तिक एवं स्वातंत्र्य चेतना का विश्वसनीय प्रतिनिधि है। आज मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास-प्रक्रिया के साथ सहज प्रामाणिक रूप के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है।

पाठ्य विषय

व्याख्या एवं विवेचन के लिए निर्धारित :

क. उपन्यास

(1) प्रेमचंद्र - गोदान।

(2) हजारी प्रसाद द्विवेदी - अनाम दास का पोथा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

ख. कहानी

केवल निम्नलिखित कहानियाँ : कफन पत्नी, गैंग्रीन, गदल, लालपान की बेगम, गुलकी बन्नो, पहाड़, दिल्ली में एक मौत, वापसी,

कहानी संग्रह : कथांतर, सम्पादक, परमानंद श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

ग. नाट्य साहित्य

I भारतेन्दु हरिश्चन्द्र - अँधेर नगरी

II मोहन राकेश - आधे अधूरे

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रेमचंद और उनका पुत्र, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

2. हिन्दी उपन्यास, रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

3. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति, देवीशरण अवस्थी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

4. कहानीः नई कहानी, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

सप्तम प्रश्न पत्र : भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

प्रस्तावना

साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मित है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषा विज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाइयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतस्संबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषित अंतर्दृष्टि देता है। अपितु भाषा-विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाश्चातय साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर, प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्वपूर्ण है।

भाषा वैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरुप, विविधिरूपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिन्दी के अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है।

पाठ्य विषय

(क) भाषा विज्ञान

भाषा और भाषा विज्ञान : भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार भाषा-संरचना और भाषिक-प्रकार्य। भाषाविज्ञानः स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ-वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्क।

स्वनप्रक्रिया : स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषणं

व्याकरण : रूपप्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रुपिम की अवधारणा और भेदः मुक्त-आबद्ध, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य। वाक्य की अवधारणा, अभिहितान्वयवाद और अन्वितभ्धिानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य-विश्लेषण, निकटस्थ-अवयव विश्लेषण, गहन संरचना और बाह्य-संरचना

अर्थविज्ञान : अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ-परिवर्तन।

साहित्य और भाषा-विज्ञान : साहित्य के अध्ययन में भाषा-विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

(ख) हिन्दी भाषा

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ - वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ-पालि, प्राकृत-शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण

हिन्दी का भौगोलिक विस्तार : हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ी बोली ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था-खंड्य, खंड्येतर। हिन्दी शब्द रचना-उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना-लिंग, वचन और कारक-व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप। हिन्दी वाक्य-रचनाः पदक्रम और अन्विति।

हिन्दी के विविध रूप : संपर्क-भाषा, राष्ट्रभाषा,राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम-भाषा, संचार-भाषा, हिन्दी की सांविधानिक स्थिति।

देवनागिरी लिपि : विशेषताएँ और मानकीकरण।

अष्टम प्रश्न पत्र :हिन्दी निबन्ध एवं आलोचना साहित्य

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य की कुछ विधाएँ इतनी विकसित हो गयी हैं कि उनके स्वतंत्र सघन अध्ययन के लिए पृथक प्रश्नपत्र की आवश्यकता है। हिन्दी निबन्ध और आलोचना ऐसी ही एक विद्या हैं। इनका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी सफल आलोचक हो सकता है, जो हिन्दी पठन-पाठन का मूल प्रयोजन है।

पाठ्य विषय

हिन्दी के प्रसिद्ध भारतीय काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना के उदय की परिस्थिति, प्रारंभिक हिन्दी आलोचना का स्वरूप, पाश्चात्य साहित्यलोचन और हिन्दी आलोचना, हिन्दी आलोचना का ऐतिहासिक क्रम-विकासः शुक्लपूर्व हिन्दी आलोचना, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : सैद्धांतिक चिंतन एवं व्यावहारिक पक्ष, शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना, सवातंत्र्योत्तर हिन्दी आलोचना। हिन्दी के प्रमुख आलोचकों की आलोचनात्मक अवधारणाओं और पद्धतियों-प्रतिमानों का उनकी कृतियाँ के आलोक में गहन अध्ययन।

हिन्दी आलोचना की विविध प्रणालियाँ : काव्यशास्त्री, स्वच्छंदतावादी, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, रूपवादी, समाजशास्त्रीय, संरचनावादी, शैलीवैज्ञानिक, तुलनात्मक आलोचना।

I निबन्ध संग्रह : पाठ्य निबन्ध : बालकृष्ण भट्ट आत्मनिर्भरता, रामचन्द्र शुक्ल- क्रोध, हजारीप्रसाद द्विवेदी-मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है, नंददुलारे वाजपेयी-साहित्य का प्रयोजन, हरिशंकर परसाई-भोलाराम का जीव, विद्यानिवास मिश्र- आँगन का पंछी,

II व्याख्या एवं आलोचना हेतु निर्धारित आलोचक –

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
डॉ. नगेन्द्र
डॉ. रामविलास शर्मा
डॉ. नामवर सिंह

सम्पादकों द्वारा चुने गये उपर्युक्त लेखकों के तीन-तीन निबन्ध निर्धारित पाठ्यसामग्री होगी।

अद्यतन हिन्दी आलोचना - सम्पा. डॉ. सुधीर रंजनसिंह- पहले पहल प्रकाशन, भोपाल

सहायक पाठ्य पुस्तक :